REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 8 | MAY - 2021

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित अंधविश्वासों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन सतना जिले के सन्दर्भ में

डॉ. संगीता सिंह
अतिथि विद्वान समाजशास्त्र, शा0 महा0 अमरपाटन सतना(म0प्र0)

शोध सारांश–:

आज का युग विज्ञान का युग है, हर समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक तकनीकी का प्रयोग हमारे समाज में हो रहा है और इस वैज्ञानिक तकनीकी की सहायता से मानव चाँद पर अपने कदम रख चुका है और अन्य ग्रहों पर पहुँचने के लिए प्रयत्नशील है। आज के मानव ने अपने मस्तिष्क का इतना विकास कर लिया है कि चाँद पर अब अंतरिम स्टेशन बना रहा है फिर भी आज संसार में जहाँ विज्ञान और तकनीकी हर क्षेत्र में व्याप्त है वहाँ यदि व्यक्ति या समाज अंधविश्वास, संकीर्णता, रूढ़िवादिता तथा पूर्वाग्रहों में जकड़ा हुआ है तो समाज की प्रगति में रूकावट पैदा हो जाती है जैसे – बिल्ली का रास्ता काट देने पर यह सोचकर घर वापस लौट जाना कि कार्य नहीं होगा। अगर आप जायेंगे नहीं तो कार्य कैसे होगा। फिर भी लोग नहीं समझ पाते कि सूचना क्रांति के दौर में हम भले ही अंतरिक्ष और चांद पर बसने की सोंच रखते हैं, लेकिन अंधविश्वास अब भी हमारा पीछा नहीं छोड़ रहा है। वैज्ञानिक युग के बढ़ते प्रभाव के बावजूद अंधविश्वास की जड़ें समाज से नहीं उखड़ रही हैं। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जादू–टोने के नाम पर लोगों को प्रताड़ित किए जाने, आंख फोड़ने, गाँव से बाहर निकाल देने सहित कई तरह की घटनाएं आज भी बदस्तूर जारी हैं। वैसे धर्म में काफी अंधविश्वास व्याप्त है जैसे – किसी भी देवता को प्रसन्न करने के लिए जीव बलि देना। जादू–टोना करना, मंत्र–तंत्र द्वारा अपने स्वार्थ सिद्ध करना या दूसरों को नुकसान पहुँचाना आजकल तंत्र–मंत्र द्वारा ग्रह– नक्षत्र पूजा, वशीकरण, सम्मोहन, मारण ताबीज, काला जादू का प्रचलन हो गया है। ऐसे बहुत से अंधविश्वास है, जो लोक परंपरा से आते हैं जिसके पीछे कोई ठोस आधार नहीं होता। अंधविश्वास को दूर करने का सबसे अहम रोल परिवार तथा अध्यापकों को जाता है जो छात्र तथा छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न कर अंधविश्वास के प्रति नकारात्मक सोच उत्पन करें तथा उनमें प्रयोगों द्वारा शिक्षा के द्वारा अंधविश्वासी बातों को गलत साबित करके उन्हें दिखाये और यह सब कार्य सही शिक्षा के द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करके सम्भव किया जा सकता है।गाँवों में प्रचलित अंधविश्वास के रोकने के लिए इन सबको वैज्ञानिक कारण समझकर जागरूकता पैदा करना चाहिए।

मुख्य शब्द–:समाज, अंधविश्वास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

प्रस्तावना–:

मानव–जीवन को नियंत्रित करने एवं गति देने में विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं की अहम् भूमिका रही है। इन्हीं प्रक्रियाओं में आस्था एवं विश्वास का भी योगदान है जो मानव–समुदाय के विभिन्न क्रिया कलापों का नियमन एवं नियंत्रण करती है। कोई भी ऐसा समुदाय नहीं है जो इन विभिन्न प्रक्रियाओं से प्रभावित नहीं है।

मानव के लिए उसकी सृजनात्मक प्रवृत्ति ही संभवतः सर्वोत्तम देन है। उस सृजनात्मक या साधानात्मक क्षमता की सबसे उत्कृष्ट अभिव्यक्ति समाज है, परन्तु यह समाजिक जीवन केवल सुख, शांति और संगठन का ही घेरा नहीं है, अपितु अनेक प्रकार की समस्याओं का हल ढूंढने के लिए सोच–विचार कर समाधान भी निकालना पड़ता है। सदियों से चली आ रही रूढ़ियाँ मानव–जीवन के मानस–पटल के अवचेतन मन में गहराई से जड़ जमा चुकी हैं झाड़–फूँक करने वाले ओझा गुणी आम लोगों के इस अंधविश्वास का मनोवैज्ञानिक भयादोहन कर उनका भावनात्मक शोषण करके अपनी आजीविका चलाते हैं। यह प्राचीन, विश्वव्यापी और दृढ़ विलक्षणता के बावजूद उपयोगी है। कुछ मुख्य भाग जो इसके घेरे में हैं वे लगभग सर्वव्यापी हैं। डायनों को शैतान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। मानव का अंधविश्वासी होना मात्र अशिक्षा से जुड़ा है, ऐसा समझना भ्रम है, क्योंकि पढ़े–लिखे तथाकथित उच्च शिक्षित समाज के जिम्मेवार लोग भी ऐसी घटनाओं कर्मकाण्डों में भाग लेते पाये गये हैं जिसको अंधविश्वास की श्रेणी में रखा जाता है। ये उच्च शिक्षित समाज के जिम्मेवार लोग किसी चमत्कार के चक्कर में कोई न कोई अंधविश्वासी, अवैज्ञानिक तरीका अपनाते हैं – तो अशिक्षित ग्रामीणों, जनजातियों की स्थिति क्या होगी, कल्पना की जा सकती है।

सतना जिले के जनजातीय क्षेत्र में जनजातीय या गैर–जनजातीय समाज – सभी में यह प्रथा पायी जाती है। जनजातीय समुदाय सामाजिक परिवर्तन से प्रायः दूर है। बाहरी जीवन का प्रभाव वर्तमान में परिलक्षित हो तो रहा, परन्तु इन परिवर्तनों के बावजूद जनजातीय जीवन अपने पुरातन विश्वासों में आस्था रखता है। यह कोई आश्चर्यजनक या अजूबा स्वरूप नहीं है, परन्तु यह वह पुरातन स्वरूप है जिसने मानव–जीवन में घट रही कई घटनाओं को आलौकिक, चमत्कारिक एवं दैवी स्वरूप प्रदान किया है। देवी–देवता, भूत–प्रेत, जादू–टोना, डायन–बिसाहा इन्हीं को स्वरूप देने की प्रक्रियाओं की उपज है जो आज भी जहाँ–जहाँ मानव की अस्तित्व है, वहीं अपना प्रभाव जमाये हैं। यह अलग बात है कि जनजातीय जीवन में यह अपनी महत्वपूर्ण भूमिका बनाए हुए हैं। तथाकथित सभ्य समाज में ऐसा विश्वास नहीं है, ऐसी बात नहीं है। सभी समुदायों में, सभी कालों में, सामाजिक परिवर्तन एवं शिक्षा के प्रसार के पश्चात् भी इन प्रक्रियाओं के अस्तित्व से इनकार नहीं किया जा सकता। फिर भी जनजातीय जीवन में उनकी भूमिका प्रबल एवं निर्णायक होती है।

अध्ययन क्षेत्र :.

अध्ययन क्षेत्र षोध कार्य की प्रयोगषाला होती है,जिसे इकाई क्षेत्रफल मानकर वह अपना कार्य सिद्ध करता है। ष्षोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र भारत देष के एक प्रदेष मध्यप्रदेष का जिला सतना है जो रीवा संभाग के अन्तर्गत आता है। सतना जिले के आठों विकासखण्डों के आठ गॉवों का परिचयात्मक विष्लेषण क्रमषः प्रस्तुत है जिनमें प्रचलित अंधविष्वासों का एक समग्र अध्ययन षोध पत्र में किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. अंधविश्वास में वृद्धि कैसे हुई, इसकी जानकारी प्राप्त करना।
2. जनजातीय और गैर–जनजातीय समुदाय में अंधविश्वास के प्रति अवधारणा को जानना।
3. अंधविश्वास में वृद्धि के कारक–तत्व कौन–से हैं?
4. अंधविश्वास –समस्या के समाधान के लिए सुझाव देना।

शोध–विधिः–

अध्ययन क्षेत्र के निवासियों, सरकारी अधिकारियों, भुक्तभोगी आदि लोगों से अनुसूची के माध्यम से, प्रत्यक्ष बातचीत कर तथा साक्षात्कारद्वारा आँकड़े एकत्र कर विश्लेषण किया गया।

विश्लेषणः–

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित विभिन्न प्रकार के विचारों, अंधविश्वासपूर्ण तर्कहीन, दकियानूसी विचारों, भूत–प्रेत, जादू–टोना, मूठ, तंत्र–मंत्र, टोटका, शकुन–अपशकुन विचारों के अस्तित्व को बनाये रखने में इन (ओझा, पण्डा, भुइहार, गुनिया) आदि इन विज्ञ लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अध्ययन के लिये चयनित आठों विकासखण्डों से आठ गाँवों में पारिवारिक संरचना 1517 पाई गई जिसमें दस प्रतिशत के मान से 150

परिवारों का अध्ययन किया गया। प्रायः यह देखा गया है कि उन गावों में प्रमुख जाति परिवार सम्मिलित हुए हैं। इन्हीं चयनित परिवारों से ही तथ्यों का संकलन किया गया है। जहाँ किसी जाति या परिवार की संख्या कम है वहाँ लाटरी विधि द्वारा इकाईयों का चुनाव कर तथ्य प्राप्त किये गये। प्राप्त तथ्यों के आधार पर बहुसंख्यक जातियों में कुर्मवंशी, कुशवाहा, यादव, नाई, विश्वकर्मा, नामदेव, साहू, लोधी, रजक आदि परिवारों के साक्षात्कार दाताओं की संख्या 51.94 प्रतिशत जबकि अनुसूचित जाति में चर्मकार, कोटवार, कुम्हार आदि के परिवारों के साक्षात्कार दाताओं की संख्या 22.07 प्रतिशत तथा अनुसूचित जनजातियों के साक्षात्कार दाताओं में कोल, गौड़ आदि कि संख्या 11.33 प्रतिशत। इसी तरह सामान्य वर्ग की जातियों में ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य आदि के साक्षात्कार दाताओं की संख्या 14.66 प्रतिशत पाई गई है।

साक्षात्कारदाताओं के आयुक्रम के अनुसार 18 से 25 वर्ष के बीच सबसे कम, 26 से 50 के बीच सर्वाधिक 49.35 प्रतिशत, 51 से 75 तक 44 प्रतिशत व 76 से 100 वर्ष के बीच 6 प्रतिशत लोगों को लिया गया।इन आयु के बढ़ते क्रम में पूर्णतया अनुभवी जिनके उत्तर से विषय के अध्ययन में वैज्ञानिकता व पारदर्शिता आई है।

साक्षात्कारदाताओं में पुरूषों की प्रधानता है इसलिए परिवारों में अभी भी पुरूष प्रधान पाये गये हैं। परिवारों के मुख्या से ही साक्षात्कार लिया गया है। महिलाओं की अपेक्षा पुरूष अधिक अनुभवी एवं विज्ञ पाये गये हैं।

शिक्षा के अनुसार 88 प्रतिशत साक्षात्कारदाता माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर, 9.33 प्रतिशत स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर गाँव से एक व्यक्ति शोध उपाधि धारक भी मिले हैं। तथा 3.66 प्रतिशत अशिक्षित साक्षात्कारदाता पाये गये हैं। यही कारण है कि वर्तमान में गाँव में प्रचलित रूढ़िवादी विचारधारायें, जनरीतियाँ एवं प्रचलित मान्यताएं व अंधविश्वास का अस्तित्व बर्करार है। वर्तमान में एक व्यक्ति के सामाजिक स्तर का आकलन शिक्षण के माध्यम से ही किया जाता है।

व्यवसायों का हमारी मान्यताओं, जनरीतियों, प्रथाओं से प्रगाढ़ संबंध रहा है। कृषि प्रधान गाँव में इसीलिए इनका प्रचलन आज भी पाया जाता है। कृषि कार्य प्राचीन मान्यताओं का पुष्यपोशण करता है। कृषि के कारण लोग गाँव के बाहर नहीं जा पा रहे हैं। अतः जिस प्रकार कृषि प्राचीन मान्यताओं से चलती आई है उसी प्रकार कृषक समाज का जीवन भी प्राचीन रूढ़ियों एवं मान्यताओं के अनुसार चल रहा है।

संयुक्त परिवारों का भी संबंध प्राचीन मान्यताओं से रहा है। कृषि प्रधान गाँव में संयुक्त परिवारों की संख्या अधिक रही है परन्तु वर्तमान में शिक्षा के विकास एवं नौकरी–चाकरी के कारण संयुक्त परिवारों की संख्या में कमी आ रही है। उसके स्थान पर एकाकी परिवारों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इन परिवारों की संख्या में वृद्धि यह दर्शाती है कि भविष्य में गाँवों में प्रचलित विभिन्न रूढ़ियों की मान्यताएं कमजोर होती चली जायेंगी।

साक्षात्कारदाताओं के आर्थिक स्थित का अवलोकन करने से पता चलता है कि पचास हजार वार्षिक आमदनी वालों की संख्या अधिक तथा दो लाख से अधिक आय वालों की संख्या केवल 14 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट होता है कि गाँव में अधिकांश परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। गाँव में व्यक्ति गरीबी के कारण छोटी–छोटी बीमारियों की चिकित्सा शहरों में स्थित औषधालयों में नहीं करा सकता वह मजबूर होकर गाँव में प्रचलित रोग चिकित्सा की पद्धतियों में झाड़फूंक, जादू–टोना, टोटका, वदना, व्रत–उपवास आदि का सहारा लेता है। अर्थाभाव के कारण ऐसा करना उनकी मजबूरी है। इससे स्पष्ट होता है कि आर्थिक सम्पन्नता व विपन्नता गाँव में प्रचलित मान्यताओं को प्रभावित करता है।

अनुसंधान विषय से संबंधित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करते समय साक्षात्कारदाताओं की मनःस्थिति का भी अध्ययन किया गया। साक्षात्कारदाताओं से सबसे पहले जादू–टोना द्वारा कार्य की सिद्धि, जादू–टोना के फायदे व नुकसान के बारे में जानकारी प्राप्त की गई। गाँवों में अभी भी 70 प्रतिशत से अधिक लोग जादू–टोना के प्रचलन से बारे में जानते है और इसका प्रयोग मनुष्य, कृषि, पशु जीवन में प्रयोग किया जाता है। उनके अनुसार इसके प्रयोग से फायदा भी होता है और विरोधी को नुकसान भी पहुंचाया जा सकता है। तथा 56.67 से अधिक लोग जादू–टोना के प्रभाव को मानते हैं। जादू–टोने का प्रयोग 70 प्रतिशत लोग किन्ही न किन्ही रूप में करते हैं परन्तु 79.33 प्रतिशत लोग इससे अच्छे कार्य होने को नहीं मानते परन्तु 20.67 प्रतिशत लोग मानते हैं कि इससे अच्छे कार्य भी किये जा सकते हैं। जैसे जादू–टोना द्वारा दूसरों को नुकसान करने के लिए मंत्रों का

प्रयोग किया जाता है तब उसी तरह जादू–टोना व मंत्रों द्वारा उतारकर नुकसान से बचाया जाता है। उदाहरणार्थ जैसे विशैले जीव जन्तुओं के काटने से मंत्रों द्वारा झाड़फूंक करते हैं।

ग्रामीण जनरीतियाँ एवं रोग चिकित्सा मध्यप्रदेश में रीवा सम्भाग के गाँवों का समाजशास्त्रीय अध्ययन में जादू–टोना पर 95 प्रतिशत लोगों ने विश्वास प्रकट किया हैं तथा विश्वास के कारण में जादू–मंत्र से भूत–प्रेत बाधा दूर होना, टोना मूठ का लगना व मंत्र से अच्छा होना, विषैले जीव जन्तुओं के काटने पर मंत्र से अच्छा होना, विभिन्न रोगों का मंत्र से अच्छा होना। विनाशक जादू–टोना से डर आदि।

सुझाव –

गाँवों में प्रचलित अंधविश्वास के रोकने के लिए इन सबको वैज्ञानिक कारण समझकर जागरूकता पैदा करना चाहिए। जिससे गाँवों में फैली बीमारियों, महामारियों, पोलियो, चेचक, खसरा आदि का उन्मूलन हो सके।

उपरोक्त सुझावों के अलावा अन्य सुझाव निम्नलिखित हैं –

(1) ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक से अधिक स्कूल खोले जायें तथा औपचारिक–अनौपचारिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये।

(2) हमारे देश में शिक्षण व्यवस्था में अंधविश्वासों के संबंध में कोई प्रावधान नहीं है। स्कूल स्तर पर पाठ्यक्रय में शामिल करने की आवश्यकता है।

(3) हमारे देश के टी0वी0 चैनलों में आपबीती, हातिमताई, अतिफ लैला आदि एवं डरावनी फिल्में भी दिखाई जाती हैं। जिसमें भूत–प्रेत, जादू–टोना आदि को बढ़ावा मिलता है। सरकार को चाहिए कि ऐसे डरावने टी0वी0 सीरियल एवं फिल्मों को प्रतिबन्धित करना चाहिए।

(4) ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक कार्यकर्ताओं, समाज सेवी संस्थाओं, ग्राम पंचायत, शिक्षकों, चिकित्सकों, पुलिस कर्मियों को उस क्षेत्र में फैले अंधविश्वासों का विशेष प्रशिक्षण दिलवाकर गाँव व पंचायत स्तर पर जाकर चौपाल व सभाकर लोगों को सच्चाई से रूबरू करने की जरूरत है।

(5) ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार जैसे चलित चिकित्सालय व ब्लाक या मण्डल मुख्यालय में मनोरोग विशेषज्ञ, मनोरोग चिकित्सक, सामाजिक कार्यकर्ता नियुक्त करना चाहिए।

(6) सरकार को वैज्ञानिक चिन्तन व वैज्ञानिक सोच की पत्र–पत्रिकाएं व प्रिंट मीडिया में अंधविश्वासों को दूर करने संबंधी विचारों का प्रचार–प्रसार करना चाहिए।

(7) अंधविश्वास दूर करने के लिए सरकारों को कड़े कानून बनाने चाहिए और जो भी कानून बने उसका कढ़ाई से पालन होना चाहिए तथा कानून तोड़ने वालों पर सख्त कार्यवाही होना चाहिए।

(8) अंधविश्वासों को बढ़ावा देने वाले विज्ञापनों जैसे धनवर्षा लक्ष्मी यंत्र, चरण पादुका आदि चमत्कारी यंत्र–तंत्र–मंत्र व अद्भुत किस्म की गारंटियाँ देने वाले का वैज्ञानिक विश्लेषण कर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए क्योंकि इनके उपयोग से धन की वर्षा होने लगे तो भारत सरकार को भी यही करना चाहिए। जिससे भारत की अर्थ व्यवस्था सुधर जाये।

(9) ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादातर अंधविश्वासों जैसे– भूत–प्रेत, जादू–टोना, वदना, व्रत–उपवास, टोना–टोटका अपशकुन आदि का प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है। इसलिए महिलाओं में विशेष जन जागरूकता प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।

(10) अंधविश्वास उन्मूलन में कार्य कर रहे लोगों, सामाजिक संस्थाओं स्वयं सेवी संस्थाओं को प्रोत्साहित व पुरूस्कृत करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची–:

1. सिंह, डॉ0 इन्द्रपाल सिंह : समाज विज्ञान का परिचय
2. सिंहा वी0सी0, द्विवेदी, आर.एस0 : सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी
3. मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ : सा. शोध एवं सांख्यिकी
4. अग्निहोत्री, रामप्यारे : रीवा राज्य का इतिहास
5. डॉ0 राधाकृष्णन : धर्म और समाज
6. देसाई डॉ0 आई0पी0 : ग्रामीण समाजशास्त्र

7. शास्त्री डॉ0 रामसागर	:	विंध्य दर्शन भाग–1 एवं 2
8. शास्त्री डॉ0 रामसागर 2001	:	जिला सांख्यिकी पुस्तिका
9. डॉ0 राधेशरण	:	विन्ध्य क्षेत्र का इतिहास
10. अग्निहोत्री गुरु रामप्यारे	:	रीवा राज्य का सांस्कृतिक इतिहास
11. सिंह, जीतन	:	रीवा राज्य दर्पण
12. श्रीवास्तव के0सी0	:	प्राचीन भारत का इतिहास
13. उपाध्याय वासुदेव	:	प्राचीन भारतीय स्तूप गुफा एवं मंदिर
14. मिश्र चिंतामणि	:	मेरी बस्ती मेरे लोग
15. दुबे हरिहर	:	सतना जिले का इतिहास

डॉ. संगीता सिंह
अतिथि विद्वान समाजशास्त्र, शा0 महा0 अमरपाटन सतना(म0प्र0)